RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-11
November -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

पूर्वी राजस्थान के कथात्मक लोकगीत (कन्हैया गायन के विशेष संदर्भ में)

[1]डॉ. करतार सिंह [2]शिव सिंह

[1]सह आचार्य हिन्दी विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर (राज.)
[2]शोधर्थी, हिन्दी विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर (राज.)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 16 Nov 2019

Keywords
कथात्मक लोकगीत, कन्हैया गायन, गायन संस्कृति, आदि।

ABSTRACT

"पूर्वी राजस्थान में लोकगीत का अलग ही प्रचलन है। यहां की संस्कृति में लोकगीत लोगों के कण्ठ में है जो कि खुशी के अवसर पर उद्‌गार होते है जैसे होली पर, दिवाली पर, बसंत पंचमी पर, गाँवों में विशेषकर लोगों द्वारा मनोरंजन व अपनी संस्कृति का व्यापक प्रसार इन लोकगीतों के माध्यम से होता है इन गीतों में आदिवासियों व ग्रामीण संस्कृति की विशेषतः झलक देखने को मिलती है। "पूर्वी राजस्थान में लोकगीतों में विशेषतः कथात्मक लोकगीतों का प्रचलन है और हमारा यहां कथात्मक से तात्पर्य हे कि जैसे रामायण, महाभारत, वेदों आदि व वर्तमान में प्रचलित ज्वलंत मुद्दों पर भी कथा के रूप में गीत गाये जाते हैं जिसमें किसी भी ग्रन्थ के एक प्रसंग को लेकर लोकगीतों की रचना की जाती गई है जैसे "नरसी रो मायरौ" "राम वनवास" राजा हरिशचन्द्र, द्रोपदी की बटलोई, शिव विवाह आदि जैसे प्रसंगों को लेकर कथात्मक लोकगीतों की रचना की गई है। कन्हैया गायन भी कथात्मक गीतों का एक प्रकार है। पौराणिक ग्रन्थों व वर्तमान मुद्दों को लेकर लोक कलाकार इसका गायन करते हैं, इसमें किसी भी एक प्रसंग को कथा के रूप में गाया जाता हैं जैसे–राम वनवास, सीताहरण, राजा हरिशचन्द्र, लव–कुश कथा, शिव विवाह, खेती–बाड़ी शिक्षा, बेटी बचाओ आदि।

पूर्वी राजस्थान के लोकगीतों का परिचय

लोकगीत, लोक के मनोभावों को प्रगट करने का सरलतम साधन है। इसमें मानव समाज की आदि मनोवृतियाँ और भावनाएँ, उसके हर्ष–उल्लास, शोक–विषाद, प्रेम–ईर्ष्या, भय–आशंका, घृणा, ग्लानि, आश्चर्य, विस्मय, भक्ति–निवृत्ति आदि भाव अपने सरल से सरल और विशुद्ध रागात्मक रूप में जागृत होते है। प्रत्येक क्षेत्रीय भाषा या बोली में ऐसे गीत गाये जाते हैं, जो परम्परा से लोककण्ठ में समाये हुए हैं और जिनका गायन विभिन्न लोकाचारों, उत्सवों, ऋतुओं के अनुसार जनसामान्य करता है। इन गीतों को ही 'लोकगीत' की संज्ञा दी जाती है। इनकी रचना काव्यशास्त्र के नियमों के अनुसार नहीं होती और न तो इनमें काव्यगुणों को विशेष महत्व दिया जाता है। इनमें वैदिक व्यवहार की भाषा में लय–सुर का समावेश होता है। सामान्य जीवन में सुख–दुःख, आशा–निराशा और उत्साह का वर्णन होता है। अन्य लोकभाषाओं की तरह पूर्वी राजस्थान में भी लोकगीतों की एक समृद्ध परम्परा है। ये लोकगीत विभिन्न अवसरों पर गाये जाते हैं।[1]

कथात्मक लोकगीतो का परिचय

भारतीय आर्य–भाषाओं में उपलब्ध कथात्मक लोकगीतों के लिए कोई एक निश्चित संज्ञा नहीं प्राप्त होती। यही कारण है कि विभिन्न भाषाओं में इनके भिन्न–भिन्न नाम मिलते हैं। महाराष्ट्र में इन्हें 'पंवाड़ा' कहते हैं। यहाँ 'शिवा जी' तथा 'ताना जी' के पंवाड़े अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। गुजरात में इस प्रकार के गीतों के लिए 'कथागीतों' नाम प्रयुक्त होता है। 'राजस्थानी लोकगीत' के लेखक श्री सूर्यकरण पारीक ने इन्हें 'गीत–कथा' नाम से अभिहित किया है। समस्त उत्तरी भारत में लम्बे कथानक वाले गीतों के लिए निश्चित नाम नहीं दिया गया है। यहाँ गीतों में वर्णित प्रमुख चरित्रों के नाम से ही उनका नामकरण किया जाता है। उदाहरण के लिए, बंगाल में राजा गोपीचन्द के गीत को 'गोपीचन्द्रेर गान' कहा जाता है। पंजाब में 'हीररांझा' तथा 'सोनी–महीवाल' से ही कथात्मक गीतों का बोध होता है। भोजपुरी प्रदेश में 'कुंवरसिंह', 'लोरिकी', 'विजयमल' तथा 'आल्हा' का नाम लेने से इनसे सम्बन्धित गीतों का ही भाव स्पष्ट होता है।जब कोई व्यक्ति कहता है, 'आल्हा सुनाओ', तो इसका अर्थ यही होता है कि आल्हा का गीत सुनाओ। श्री जी.ए. ग्रियर्सन ने इस प्रकार के गीतों को 'पापुलर सांग' कहा है, परन्तु यह नाम संतोषजनक नहीं प्रतीत होता। लोकप्रिय गीत तो अन्य भी होते हैं। इनमें प्रचलित लोकगीतों (फोक सांग्स) का भी समावेश हो जाता है। अतएव सर्वप्रथम हमारे सम्मुख नामकरण की समस्या उपस्थित होती है।[2]

कथात्मक गीतों अथवा वर्णनात्मक गीतों के लिए भारतीय विद्वानों ने तीन नाम प्रस्तुत किए हैं, जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है। ये तीन नाम हैं, पंवाड़ा, कथागीत, तथा गीतकथा। 'पंवाड़ा' शब्द का प्रयोग उत्तरी–भारत में बहुत कम होता है। मराठी भाषा में ही यह अधिक प्रचलित है। 'कथागीत' तथा 'गीतकथा' शब्द वस्तुतः एक ही है। इन शब्दों में अनुवाद की स्पष्ट गन्ध आती है। निश्चित रूप से ये अंग्रेजी के 'बैलेड' शब्द के भावानुवाद हैं। अंग्रेजी में कथात्मक गीतों के लिए 'बैलेड' नाम प्रयुक्त होता है। 'कथागीत' अथवा 'गीतकथा' शब्द

RRIJM 2015, All Rights Reserved

प्रयासपूर्वक निर्मित प्रतीत होते हैं तथा इनमें लोकभावना का भी समावेश नहीं होता है।[3]

डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने कथात्मक गीतों पर विचार करते हुए इन गीतों को 'लोकगाथा'' नाम से अभिहित किया है। यह नाम वास्तव में सार्थक प्रतीत होता है। प्रथम, यह अनुवाद से परे है, द्वितीय, इसमें लोक–भावना का पूर्ण समावेश है और तृतीय 'लोकगाथा' शब्द भारतीय जीवन और परंपरा के निकट पड़ता है। 'गाथा' शब्द का प्रचार उत्तरी भारत में बहुत होता है। इसमें कथात्मकता एवं गेयता–दोनों का समावेश है, साथ ही यह प्राचीन एवं परंपरानुगत शब्द भी है। संस्कृत के 'अमर कोष' के अनुसार 'गाथा' शब्द का अर्थ है 'पितरगण, परलोक और ऐसे ही अन्यान्य विषयों से सम्बद्ध अनुश्रुतियों पर आधारित पद्य या गीत। विष्णु–पुराण में भी 'गाथा' शब्द का उल्लेख है, जिससे उपर्युक्त अर्थ स्पष्ट होता है। 'गाथा सप्तशती' तथा 'गाथा नाराशंसी' से भी उपर्युक्त अर्थ की ही पुष्टि होती है।[4]

पूर्वी राजस्थान के कथात्मक लोकगीत – कन्हैया

कन्हैया गायनः–कन्हैया गायन भी कथात्मक गीतों का एक प्रकार है। पौराणिक ग्रन्थों व वर्तमान मुद्दों को लेकर लोक कलाकार इसका गायन करते हैं, इसमें किसी भी एक प्रसंग को कथा के रूप में गाया जाता हैं जैसे–राम वनवास, सीताहरण, राजा हरिशचन्द्र, लव–कुश कथा, शिव विवाह, खेती–बाड़ी शिक्षा, बेटी बचाओ आदि।

कथा गायन मण्डलीः– कन्हैया गायन शैली में मुख्यतः 5 से 7 मेडियॉ की भूमिका में रहते हैं और सहायक कलाकार के रूप में 30 से 40 लोग होते हैं मुख्य मेडियॉ कथा गायन से मॉ भवानी को मनाते हैं गुड या पतासे का भोग लगा सभी गायक सदस्यों में प्रसाद के रूप में वितरण किया जाता हैं, सर्व प्रथम मॉ भवानी को मनाने के लिए दौहै–[5]

सुरबन्धाः–

बेगी आजा दंगल में भवानी मन तरसै।
तेरा आबा सू सभा में रंग बरसै।।[6]

भवानी मनाने के बाद मुख्य मेडियॉ प्रसंग को कहानी के रूप में स्त्रोताओं के मध्य ढ़ोलक, मंजिरा की ताल के साथ पेश करते हैं उसके बाद टुम्मो के रूप में कथा को पद्य के रूप में गाते हैं, पूरी गायक मण्डली एक साथ–मुख्य मेडियाओं का साथ देती हुई कथा को गाती हैं, साथ ही मध्य में कहानी के माध्यम से मुख्य मेडियॉ उसे समझाने का प्रयास करते हैं।

वाद्ययंत्रों में मुख्यतः ढ़प और बम का (नगाड़े) एक साथ लय के साथ बजाया जाता है।

प्रमुख कन्हैया दंगल पार्टीयॉ वाले गॉव–कुट्टीन साहबदास, कटकड़ मैडी, परीता, नारौली ढांग, हुडला, नान्दरी, गनिपुर आदि।

राजा हरीशचन्द्र की कथाः–

कथा का उठाव–औ सतवादी राजा हरीशचन्द्र और सतबाड़ी तारानार और सत अजमावे चल दिया सो कोई विश्वामित्तर मुनिराज।[7]

झड़ीः– हरे हरीशचन्द्र सत्तधारी, हो का जा रह्यो वाके कुमार संग में तारावती सी नारी। चोखो कटे समय बलवान दिनन के आटे रे हे लियो फेर समय न पडगे देखो फांटे रे।

कहानीः–अरे मुनि तेरे द्वारे पै आयो रे, मुनि तेरे द्वारे पे आयो और दे दे राजा दान जगत में नाम बडो पायो अरे भूप से वचन लिये भरवाय, और साठ भार स्वर्ण के संग में राजपाट ले जाय–राज सब ले लियो तो।

टुम्मोः– हो दियो सारो राज भगत न माया मोह छोड्यो रे
हे बाकी साठ भार स्वर्ण कू कांशी पहुॅचो रे [8]

कहानीः– अरे नगर में शोर भयो भारो–भारो और बिक रहे नर और नार संग में कंवर बहुत प्यारो, साठ भर स्वर्ण दे दिज्यो रे–2 और बीस भार स्वर्ण में हरिया कालू के रिज्यो, चलौ एक वेश्य वहॉ आवेरे–2 ओर धरम राज राणी के संगं में रोहित ले जावेरे तीनो बिक रहे तो।

टुम्मोः– हो रोजिना को काम मुनिवर ठाड़ो–बाकू पावेरे
हे देखो गये साठ दिन बीत भूप थके जावेरे।[9]

कहानी छन्दः– राजा चला पाणी भरण धर हाथ में घाघर लियो चलते–चलते राह में गंगा के तट पर आ गया गंगा पै नार तारावत भूप को मिल गई भर लिया घाघरा नीर से पर हाथ से उठता नहीं।

लहराः–

गंगा पै नैकी होगी ओ बलम आयो पाणी कू
घडियॉ उचवादे धरवादे, बोल्यो राणी सू
गंगा पै नैकी हो बड़गी, भारी बणगी नेखी तो होगी आज
तारावती ठाड़ी–2 देखे रे–देखे तो भारी नेखी तो भूप से होगी रे
नहीं उठे हाथ से घडियो ठाडौ सोच करे फिकर करे
बीच पड़यौ मजधार पार म्हारी कंया तो पड़ै
ओडो–सोडो डोले राजा राणी से बोले–राणी थोडो सौ लगादे याके हाथ
अरज म्हारी सुण लीज्यो गंगा मईया में हम्बे गंगा मईया में
उतरजा भरतार तारावती बोले वाणी रे बोलतो राणी बोलो सुगर देखो
वाणी रे राजा घटेगो धरम देखो म्हारो रे
अरज सुण–सुण ल ढोला, मिठ बोला गंगा में उतरजा रंग ढोला रे।[10]

कहानीः– अरे बेटा फूल तोड़वा जाज्यो रे भरी टोकरी फूलन की बेगोसो ल्याजो रे ये बेगोसो ल्याजो रे तू जल्दी आज्यो रे–2, भर टोकरी फूलन की बेगोसो ल्याजो रे, मेरी मैया आज्ञा दे दे

जल्दी सी में बेगो जाऊ रे–2, भर टोकरी फूलन की में बेगोसा लाऊ रे।

लहराः– चलेजा बेटा फूलन कू चलेजा पूजा हो वाडी
ओ होगी आंथा की बगत झालर वजवाडी बेगो जाज्यो जल्दी आज्यो बेगोसो जाज्यो लाल–मईया तो तेरी अरज करे.....
अरे तो छोरा फुल बगिया में आयो रे, वाने दियो झुण्ड में हाथ नाग न खायो रे कुंवर बेहोश पडयो राणा स कहे कोई जार लाल तेरो मरयो तो पडयो
भारी रोवे तारावत नार बगिया में भारो शौर मचयो
बैठयो हो जा हजारी बेटा आज रह्यो तो मोय कायकू सत्तारे
बैठयो हो जा तो वीर बलधारी रे तेरी रूधन करे महतारी रे
बैठयो हो जा कंवर पती न्यू कहवे सती
तेरे तो बिना मेरे लाल आज कैसे होवेगी गती।[11]

कहानीः– अरे कंवर बगिया में डस लियारे, अरे वाके चढ़यो बदन में जहर सटाटो नीलो वरण किया रे।
अरे तारावत भारो–भारो रूधन करे–2
और नहीं संग में पिता तेरो रे बेटा कैसे धीर धरे–रे छतिया फट गई तो।

लहराः– अरे डस लियो छोना फुल बगिया में नहीं संग में ढोला रे
ओ छतिया फटे गजब की पडयो बम सो गोला रे
कंवर डस खायो बगिया में नहीं संग रतिया
डस खायो वाको लाल मईया पै नाय धीर बंधे रे।
बंधे तो भारो रोवे औ संवर की माई रे
बेटा थोडो सो बंधाजा मोकू धीर अरज करू भारी रे
लोटी पीटी डोले राणी कंया करू भगवान गजब कर दी
भारी गोदी में बेटा ले लिया नहीं संग चलू वाको हियो
ले गोदी में लाश कंवर की मरघट में राणी आई रे
ले गोदी में कंवर कू राणी रै पहुंच चली मरघट में जावै रे
दरबारी ठाड़यो पावे रे राणी सू मांगे कर को टको
सुणज्यो सब सरदार हाल देखो उनको।[12]

कहानीः– राणी कू समझावे रे–2 और दे दे राणी टको धरम नहीं म्हारो घट जावे अरे घड़ो नहीं म्हारो उँचवायों रे –2 तोय जितनो प्यारो लगे धरम मोय उतनो ही प्यारो अरे चूनरिया सर की फाड दई–2 और आधी कर में दई नार न आधी मोड लही रे कर वाको देदियो तो

लहराः– पडी कंवर की लाश, लाश आज देखो मईया न उठाई रे
ओ कैसी विधि रची त्रिलोकी समझ नहीं आई रे
कंवर की लाश धरी नहीं समझ पडी ठाडो तो देख
आज त्रिलोकी तैने खूब करी रे। ठाडो देख तो भूप तपधारी रे
ले गोदी में कंवर क राणी रे गंगा पर भारो रूधन करे
कर वज्जर की छाती कंवर कू गंगा में धरे
धर गंगा में लाश कंवर की देवी का मंड पै आई
भग्यो आयो ऋषि राज बेहोश पड़ी वाकू पाई रे–2
भड़डू भग्यो आयो तो देव गणधारी रे पहुंचौ
देवी का भवन में जार राणी कै आगे लाश धरी गजब करी
ठाडो देखे आज त्रिलोकी तैने खूब करी।[13]

कहानीः– मुनिवर गंगा पै ठाडयो–2 और लिया गंगा से बहार कुंवर कू गोदी में आड्यो चल्यो देवी के मंड पे आयो राणी कू नहीं होश कुंवर कू फोरन छोड़ आयो।
बठयों वो बामण खण्ड खेला काशी नगरी में जाय दियो वाने डाकन को हेला रे भगदड़ मच गई तो।

लहराः– ओ भारो शोर करयो काशी में कौशिक भाग्या–2 डोल्यै
तैरो हाथ में ले जाओ कालू हरिया सू बोल्ये रे
हरिया जा रहो है असरार हाथ में ले नंगी तलवार
खैच रहो डांकन तू वध कर कहाँ से आई तो।
बता देख ले मजा कंवर खिलौनो खायां भारी तौकू मिलै तो सजा।
खड्क देबा कूं उठायो पकड़यों हाथ मुरारी ने
मत मारे थारी राणी लेजा कंवर हजारी रे
राजा तेरो सत्य अटलकर दियो रे
तोकू राजपाट सब दियो रे फरज तेरो होगो तो अदा
भारी भोगी तो सजा करों अवध को राज
धरम तेरो रहगो तो सदा।[14]

संदर्भ सूची

1. एफ.बी. गुमेर – ए हैन्ड बुक ऑफ लिटरेचर – बैलेड – पृ. 37
2. डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय – भोजपुरी लोकसाहित्य का अध्ययन, पृ. 122
3. वही, पृ. 131–135

4. जी.एन. किटरेज – एफ. जे. चाइल्ड कृत – इंगलिश ऐंड स्काटिश पापुलर बैलेड्स की भूमिका, पृ. 4
5. जयनायक कैसेट, मण्डावर, दौसा
6. लाली मीना, नान्दरी, सिकराय (शोधार्थी द्वारा लिया गया साक्षात्कार)
7. लाखन्ती, महावीरजी, (शोधार्थी द्वारा लिया गया साक्षात्कार)
8. लोककलाकारों द्वारा लिखा गया हस्तलिखित संकलन
9. लोककलाकारों का ऑडियो संकलन
10. लखनबाई–दालनपुर (शोधार्थी द्वारा लिया गया साक्षात्कार)
11. धवले मीना (शोधार्थी द्वारा लिया गया साक्षात्कार)
12. झण्डू राम मीना (शोधार्थी द्वारा लिया गया साक्षात्कार)
13. लखनबाई (शोधार्थी द्वारा लिया गया साक्षात्कार)
14. ममता मीना (शोधार्थी द्वारा लिया गया साक्षात्कार)

RRIJM 2015, All Rights Reserved